P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-3* (Part-1) November- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

संत साहित्य में लोक कल्याण की भावना

सारांश

संतो का जीवन लोक कल्याण एवं परोपकार के लिये समर्पित होता है। संत समाज में सद्भाव का वातावरण बनाकर सन्मार्ग की प्रेरणा देते है। सामाजिक विकृतियों को दूर करने के लिये संतो के साहित्य ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। संतो का साहित्य लोक वाणी का अद्भूत प्रयोग था जिसका मानव धर्म पर अमिट प्रभाव पड़ा। संत रविदास, संत दरिया साहब, संत दादू दयाल, संत नानकदेव, संत पलटू साहब आदि अन्य संतों ने अपनी वाणियों से सामाजिक बुराइयों को दूर कर समाज को नई दिशा प्रदान की। लोकोपकारी संत के लिये यह आवश्यक नहीं कि वह शास्त्रज्ञ हो। उसका लोक हितकर कार्य ही उसके संतत्व का मानदण्ड होता है। 21वीं सदी में भारत और पूरे विश्व में अलगाव, आतंकवाद, हिंसा, आत्महत्या, अपहरण, शारीरिक एवं आर्थिक अनैतिकता, मानसिक विकृतियॉ, शोषण, स्वार्थपरकता, नास्तिकता और अमानवीय कृत्यों की तेजी से बढ़ोत्तरी हो रही है और नर–नारी भय के वातावरण में जी रहे है। ऐसी विषम परिस्थितियों में संतों ने समाज में नई क्रांति लाई। संतों ने लोक हित में "नर नारी दोनों को समान अधिकार एवं स्वतन्त्रता की प्राप्ति" का मत जारी किया। नारियों को स्वतन्त्र अधिकार दिलाने में संतों का योगदान बहुत अधिक है। संतों की यह सार्वभौम आकांक्षा रही है कि मनुष्य का लौकिक जीवन सुखमय तथा आनन्दयुक्त हो। संत मानवीय एकता और लोक–कल्याण के प्रबल समर्थक थे उन्होंने विकार रहित होकर मानव मात्र के कल्याण की कामना की। सभी धर्मों के सार रूप को ग्रहण कर समाज को उन्नति की ओर ले जाने का सार्थक प्रयास किया।

मनीषा तिवारी
सहायक प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग,
महाराणा प्रताप महाविद्यालय,
लालबाग, फैजाबाद (उ0प्र0)

मुख्य शब्द : लोक कल्याण, संतो का साहित्य, अलगाव, आतंकवाद, हिंसा

प्रस्तावना

समय के थपेड़ों से अच्छी–अच्छी व्यवस्थाएं टूट जाती है, विकृत हो जाती है, जब भी सामाजिक विकृतियों और रूढ़ियों ने समाज को आ घेरा है तो समाज का प्रबोधन करने को इन श्रेष्ठ लोगों की बड़ी श्रंखला निरन्तर खड़ी होती गयी। ये श्रेष्ठ लोग अर्थात संत आध्यात्मिक महापुरूष थे। संतो के साहित्य ने सामाजिक जागरूकता एवं समरसता का नया आयाम प्रदान किया और लोक कल्याण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। संत काव्य शोषण से त्रस्त जनता की इस आकांक्षा को प्रकट करता है कि ऐसे समाज का निर्माण हो जिसमे ऊॅच–नीच का भेद न हो, जिसमें सताने वाले राजा न हो। धर्म के ठेकेदार न हो, समाज व्यवस्था का आधार प्रेम हो, जहॉं लोग रोग और अकाल से न मरें, जहॉं स्त्रियों और पुरूषों के लिये एक से नियम हो। भारतीय संत परम्परा के इन संतों ने स्थान–स्थान पर लोक भाषाओं में भक्ति आधारित साहित्य का अगाध भण्डार लिखकर समाज के सम्मुख रख दिया। संत साहित्य में सैकड़ों ऐसी पंक्तियां मिलेंगी जिनमें संसार त्यागने वाले संसार से मुॅह मोड़कर, मनुष्य से दूर, ईश्वर की खोज करने वाले महात्माओं पर व्यग्य किया है। संत साहित्य मानव सम्बन्धों के प्रति गहरी आस्था प्रकट करते दिखाई देते है। संत साहित्य में लोक जीवन और अलौकिक जीवन की स्वीकृति मिलती है इनका साहित्य शाश्वत सत्य की अनुभूति है।

मूलतः संतों का साहित्य लोक कल्याण की भावना समाए हुए है। वह मानवीय सहानुभूति और सह्दयता का साहित्य है। इसमें मानव मात्र की समानता की भावना विद्यमान है। कबीरदास जी ने सभी कार्यों का आधार भक्ति माना है। उनका विश्वास है कि हिन्दू मुसलमान में ऐक्य स्थापित करने का आधार भगवद्भक्ति ही हो सकती है। संत साहित्य समस्त नर–नारी को समभाव से एक सूत्र में बॉध सकता है और हिंसा, टकराव, ईर्ष्या, वैमनस्य, युद्ध आदि को रोककर जन–जन को प्रेम की धार में चलकर स्वस्थ मानव की जीवन शैली संसार में उत्पन्न कर सकता है।

21वीं सदी में भारत और पूरे विश्व में हर स्तर पर पारस्परिक विश्वास समाप्त हो चुका है। अलगाव, आतंकवाद, हिंसा, आत्महत्या, अपहरण, शारीरिक एवं आर्थिक अनैतिकता, मानसिक विकृतियॉं, शोषण, स्वार्थपरकता, नास्तिकता और अमानवीय कृत्यों की तेजी से बढ़ोत्तरी हो रही है और नर–नारी भय के वातावरण में जी रहे है। ऐसी विषम परिस्थितियों में यह आवश्यक है कि नर–नारियों को कोई ऐसा सुलभ मार्ग मिले जो सभी को समभाव से शान्ति एवं प्रसन्नता प्रदान करते हुए निर्भयता दे सके। वर्तमान की इस मॉग की पूर्ति के लिये संतों का साहित्य और उनका योग मार्ग पूर्णरूपेण सक्षम, उपयुक्त और प्रासंगिक है जिसको अपनाकर प्रत्येक व्यक्ति एवं राष्ट्र निर्भय हो सकता है। संत साहित्य भारतीय जनता की प्रेम, आशाओं और वेदना का दर्पण है। वह ह्दय की सबसे कोमल एवं सबसे सबल भावनाओं का प्रतिबिम्ब है।

संतों के प्रकाट्य से समस्त जनता के कल्याण का मार्ग प्रशस्त हो गया। कबीर साहित्य का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंश वही है जिसमें उन्होंने छुआछूत और सामाजिक अन्याय के विरोध में अपनी आवाज उठाई है। सामाजिक दृष्टि से कबीर का यह विद्रोह सर्वथा उचित ही था। सिक्ख मत के प्रवर्तक गुरू नानक देव साधु स्वभाव के थे। अपने स्वभाव के कारण अनेक साधुओं, फकीरों, सभी योगियों से मिले हुए थे। इन्होंने भी अपने साहित्य में सामाजिक अन्याय और ऊॅच–नीच का विरोध किया। हिन्दू मुसलमानों की बीच एकता स्थापित करने के लिए तथा ब्रह्म प्राप्ति करने के लिये इन्होंने साधे सादे उपदेश दिये। श्री गुरूग्रन्थ साहिब में नानकदेव जी कहते है–

जाति का गरबु न करीअहु कोई।
ब्रह्मु बिन्दे सो ब्राह्मणु होई।।
जाति का गरबु न करि मूरख गवारा।
इस गरब ले चलहि बहुतु विकारा।।

संत मलूकदास सभी के अन्दर एक आत्मा का दर्शन करते हुए सभी को समान समझते थे। वे कहते है जीव हत्या करना परमात्मा की हत्या के समान हैः

कुंजर चींटी पशू नर सब में साहेब एक।
काटे गला खोदाय का करै सूरमा लेख।।

कबीर की लोक कल्याण एवं समस्त कल्याण की भावना राग द्वेष से नितान्त मुक्त निरपेक्ष मंगल भावना थीः

कबिरा खड़ा बाजार में, सबकी मांगे खैर।
ना काहू से दोस्ती, न काहू से बैर।।

अध्यात्म (सत्य), लोकमंगल (शिव), कवित्त (सुन्दर) की त्रिवेणी का संगम स्थल कबीर साहित्य सचमुच तीर्थराज प्रयाग से कम महिमामय नहीं है। कबीर की इस लोक से संबंध रखने वाली बातें उनका महान समाज सुधारक रूप प्रस्तुत करती है। श्रम तथा श्रमजीवी जातियों को जिन्हें हेय समक्षा जाता था कबीर ने उन्हें एक अनोखा सम्मान प्रदान किया। महात्मा गांधी जब चरखा चलाते दिखे और श्रम की महत्ता स्थापित की तब सहज ही यह बात ध्यान में आती है कि इस क्रांति का सूत्रपात तो छः सौ वर्ष पूर्व कबीर कर चुके है। लोक कल्याण की भावना से प्रेरित संत नवीन समाज व्यवस्था के लिये प्रयास भी करते है। संत रविदास, संत दरिया साहब, संत दादू दयाल, संत नानकदेव, संत पलटू साहब आदि अन्य संतों ने भी अपने साहित्य में लोक कल्याण की भावना को स्थान दिया। उक्त समालोचक संतों को इनके क्रान्तिकारी विचारों के लिये भी कोसते है और कहते है कि इन्होंने "शताब्दियों के परीक्षित सदाचार, धर्मतत्व और सामाजिक आदर्शों को एक ही उच्छवास में फूॅक दिया।

संतों ने जिस बात की ओर विशेष ध्यान दिलाया है, वह सर्वसाधारण के विभिन्न दुखों व पारस्परिक झगड़ों को सदा के लिये हटा देना है और इसके लिये उन्होंने सबके व्यक्तिगत सुधार व सदाचरण के उपदेश दिये है। जिस प्रकार किसी राज्य शासन के विरूद्ध आंदोलन करने वाले व्यक्ति असफल होने पर राजद्रोही कहलाकर दण्डित होते है और यदि वे ही सफल हो जाते है तो देशोद्धारक बनकर पूजे जाते है। उसी प्रकार उन संतों को भी लोकधर्म व मर्यादा के पृष्ठपोषक कुछ काल के लिये बुरा–भला कह सकते है और ऐसा करना वैसी मनोवृत्तिवालों के अनुसार कदाचित न्याय संगत भी हो सकता है। परन्तु विश्व की जटिल समस्याएँ अभी सुलभ नहीं सकी हैं और न इसके लिये प्रयत्न ही बन्द किये जा सकते है। अतएव जब कभी उस ओर सफलता मिल सकेगी और इसके लिये उद्योगशील व्यक्तियों की चर्चा होगी, उस समय ये संत भी संभवतः विश्वोद्धारकों में ही गिने जायेंगे। संत परम्परा के लोगों ने लोक कल्याण की भावना को सर्वोपरि माना और स्वार्थपरकता को हेय।

संत जयगुरूदेव जी महाराज कहते है कि–संत मेहमान बनकर कुछ दिनों के लिये कल्याण हेतु आते है और अपना कर्म करके दुःख उठाते है। गुरू कृपा मार्ग देकर संत वापस घर में चले जायेंगे। साथ चलते–फिरते तीर्थ है। कबीर साहब ने अपनी एक साखी में कहा है कि संतो का लक्षण उनका निर्बरी, निष्काम, प्रभु का प्रेमी और विषयों से विरक्त होना है। इसी प्रकार गोस्वामी तुलसीदास ने भी श्री रामचन्द्र द्वारा संतों की महिमा कहलाते हुए, सभी सांसारिक संबंधों के प्रति प्रदर्शित समता के धागों के बटोर लेने, समदर्शी बने रहने तथा किसी प्रकार की कामना न रखने को ही उनके प्रधान लक्षण ठहराये है। कबीर साहब तथा उनके पूर्ववर्ती एवं समसामयिक संतों की प्रवृत्ति अपने मत को किसी वर्ग विशेष के साम्प्रदायिक रूप में ढालने की नहीं थी और न उन्होंने कभी इसके लिये प्रयत्न किया। वे अपने विचारों को व्यक्तिगत अनुभव पर आश्रित समझते थे और सर्वसाधारण को भी उसी प्रकार स्वयं निर्णय कर लेने का उपदेश देते थे।

संत लोक कल्याण करने वाले आदर्श महापुरूष होते हैं। समाज में रहते हुए निःस्वार्थ भाव से लोक कल्याण, उत्तरोत्तर, विश्व कल्याण में प्रवृत्त रहना भी आवश्यक है। यही कारण है कि संत साहित्य में लोक जीवन का वर्णन मिलता है। सभी संतो का लक्ष्य, मानव जीवन को समुचित महत्व प्रदान करने, उनको आध्यात्मिक आधार पर पुनःनिर्माण करने, उसे इसी भूतल पर जीवन्मुक्त बनकर सानन्द यापन करने तथा साथ ही विश्व कल्याण में सहयोग देने का भी जान पड़ता हैं। संतो ने बताया कि लोक के लिये अपने 'भरम करम' को निर्मूल करने तथा उस माया के बधंन से सदा के लिये छुटकारा

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-3* (Part-1) November- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

पाने पर ही हम अपने दृष्टिकोण के चिरस्थायी रूप को प्राप्त कर सकते है। कबीर साहब का मत है "माया की बेली सर्वत्र फैली हुई है और उसकी जड़ ऐसी विचित्र है कि सारी टहनियों को काट—छाँट कर देने पर भी वह फिर से कोपल देकर हरीभरी हो जाती है। इसे ज्ञान रूपी अग्नि में एक बार भस्म कर देने से भी काम नहीं चलता, क्योंकि जब तक इसके मोह रूपी फल का एक भी वासना रूपी बीज अवशेष है, इसके एक बार फिर अंकुरित होकर लहलहा उठने का भय बना हुआ है। "कबीर साहब के अनुसार सच्चा निर्धन उसी को कहना चाहिये जिसके हृदय में रामनाम का धन न हो।

उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य संत साहित्य में लोक कल्याण की भावना का अध्ययन करना है।

निष्कर्ष

संतों ने लोक हित में "नर नारी दोनों को समान अधिकार एवं स्वतन्त्रता की प्राप्ति" का मत जारी किया। हांलाकि इसके लिये राजकीय एवं समाज सेवी संगठन सभी लगे हैं फिर भी यह कार्य पूर्ण रूप से गति नहीं पा सका है। नारियों को स्वतन्त्र अधिकार दिलाने में संतों का योगदान बहुत अधिक है। "व्यभिचार, भ्रूण हत्या और बलात्कार" को रोकने के लिये संतों का योगदान महत्वपूर्ण है। संतो के सत्संग में रहकर शब्द की अलौकिक शक्ति से शब्द मार्गी नर—नारी परस्पर एक दूसरों को नेक निगाह से संबंध रखते है। उनमें काम भाव, वासनात्मक इच्छा नहीं उठती है। उनका मन चंचल नहीं होता। संतों ने समाज अथवा धर्म की किसी भी व्यवस्था को वैसा नहीं रहने दिया जैसा कि वह चली आ रही थी। समाज की प्रत्येक पुरानी व्यवस्था को तोड़ा और तोड़ा ही नही समाप्त कर दिया। संतों की यह सार्वभौम आकांक्षा रही है कि मनुष्य का लौकिक जीवन सुखमय तथा आनन्दयुक्त हो। मनुष्य का जीवन दैहिक, भौतिक तथा दैहिक व्याधियों से मुक्त रहे। मनुष्य इन व्याधियों से बचने के लिये कोई न कोई उपाय जन्म से मृत्यु तक बराबर करता रहा है। वर्तमान में कुछ ऐसी स्थिति है कि अनेक उपायों के बाद भी मनुष्य त्रय पापों से बुरी तरह ग्रसित है और दुख में ही जन्मता है। संत मत व्यक्ति को सुखी बनाता है, प्रेम से भरा जीवन प्रदान करता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *संत कबीर, पृष्ठ 26—31*
2. *भारत की संत परम्परा और सामाजिक समानता, कृष्ण गोपाल।*
3. *हिन्दी संत काव्यः समाजशास्त्रीय अध्ययन।*
4. *कबीर समग्र।*
5. *संत मलूक ग्रन्थावली, पृष्ठ 13*
6. *कबीर ग्रन्थावली, साखी 2 व 6, पृष्ठ 86*
7. *संतो के योग मार्ग की प्रांसगिकता, जवाहर लाल शर्मा।*
8. *निरबैरी निहकामता, सॉई सेंती नेह। विषया सूं न्यारा रहै संतनि को अँग एह।। (कबीर ग्रन्थावली)*
9. *संत व लोक मत में योगसाधना का स्वरूप, शोध प्रबन्ध, डॉ0 मनीषा तिवारी।*
10. *गुरू ग्रन्थ साहिब,*